हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-I (प्रश्नपत्र-1)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL1

Name: Alok Prasad **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** *7100

Center & Date: M.K Ngr / 7 July **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** *चुनकर किन्हीं* **तीन प्रश्नों** *के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** *मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS*** *and printed both in* ***HINDI & ENGLISH.***
Candidate has to attempt ***FIVE*** *questions in all.*
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप

सिद्ध साहित्य का संबंध आदिकालीन सिद्ध परंपरा से है जिसका संबंध बौद्ध धर्म की वाममार्गी परंपरा से है

सिद्ध साहित्य में सिद्धों द्वारा अपनी धार्मिक मान्यताओं ~~हास रचित साहि~~ के प्रचार हेतु रचित साहित्य का संकलन है। सिद्ध साहित्य की भाषा अर्द्धमागधी अपभ्रंश है। किन्तु इसमें सीमित स्तर पर खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप देखा जा सकता है। उदाहरण हेतु

"घर ही बइसी दीवा जाली
वोणहिं बैठहि चंटा चाली"

इसमें आकारंत एवं ईकारांत शब्दों में खड़ी बोली की विशेषताएँ दिखती है।

"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"पंडित सअल सत्थ वक्खणाह
देहहिं बुद्धि बसंत ण जाणह"

उपरोक्त पंक्तियों में 'न' की जगह ण का प्रयोग खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप को दर्शाता है।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि सिद्ध साहित्य में सीमित स्तर पर खड़ी बोली का आरम्भिक स्वरूप दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिंदी भाषा-क्षेत्र से तात्पर्य उस क्षेत्र से है जहाँ हिंदी-भाषा का प्रयोग होता है।

हिंदी भाषा क्षेत्र का प्रथम स्तर हिंदी भाषी - उन राज्यों से है जहाँ न केवल हिंदी समझी जाती है बल्कि बोली भी जाती है। इन राज्यों में उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, राजस्थान आदि मिलाकर कुल 10 राज्य आते है।

दूसरे स्तर वह राज्य आते है जहाँ हिंदी का प्रयोग द्वितीयक भाषा के रूप में होता है अर्थात् यहाँ हिंदी समझने में आम तौर पर कोई समस्या नहीं आती है। इन राज्यों में वे आर्य भाषी राज्य आते है जिनका विकास हिंदी के साथ-साथ ही हुआ है। उदाहरण हेतु - महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, इत्यादि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंदी भाषा क्षेत्र में कुछ अन्य देशों को भी शामिल किया जाता है जहाँ हिंदी समझी या बोली जाती है। इनमें नेपाल, फिजी, त्रिनिदाद, आदि

हिंदी भाषा क्षेत्र में अंतिम स्तर पर इन विश्वविद्यालयों को शामिल किया जाता है। जहाँ हिंदी भाषा का अध्ययन अध्यापन किया जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी भाषी क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और 100 करोड से अधिक लोगों द्वारा हिंदी बोली - समझी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्विवेदी युग में हिंदी भाषा के मानकीकरण का दौर शुरू होता है। ज्ञातव्य है कि ~~यह दौर में खड़ी बोली~~ यह दौर भाषीय द्वैत की समस्या से गुजर रहा था। जहाँ कुछ साहित्यकार पद्य के लिए ब्रजभाषा को खड़ी बोली पर तरजीह दे रहे थे। अतः ऐसे समय में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान अविस्मरणीय रहा

① द्विवेदी जी द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा के निर्देशन में 'सरस्वती' पत्रिका प्रतिपादित हुई। जिसमें द्विवेदी जी द्वारा 'भाषीय अनुशासन' पर बेहद मजबूती से कार्य किया

② सरस्वती पत्रिका के माध्यम से द्विवेदी जी ने हिंदी भाषा के मानक स्वरूप का विकास किया। उन्होंने आवैं, दुजाति जैसे शब्दों के प्रयोग की निंदा की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(3) द्विवेदी जी की प्रेरणा से ही 'कामता प्रसाद गुरु' द्वारा हिंदी व्याकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया गया।

(4) अमानक शब्दों - सूरमे, ऐवते इत्यादि के प्रयोग को अमानक घोषित किया।

(5) स्वयं के स्तर पर द्विवेदी जी ने अपने निबंधों, पत्रों, पत्रिकाओं, आदि में हिंदी भाषा का मानक स्वरूप प्रदान किया।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी भाषीय द्वैत समाप्त करने एवं हिंदी भाषा के मानकीकरण में एक स्तंभ के रूप में खड़े रहे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'ब्रह्म समाज' का योगदान

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में अनेक संस्थाओं, अनेक नेताओं का योगदान रहा। जिसमें ब्रह्म समाज का योगदान भी विस्मरणीय है।

ब्रह्म समाज की स्थापना राजाराम मोहन राय द्वारा 1820 ई. में की गयी। जिसका मुख्य उद्देश्य समाज सुधारों पर बल देना था। राजा राम मोहन राय आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और अंग्रेजी के समर्थक होने के बावजूद हिंदी के पक्षधर थे।

* ब्रह्म समाज ने हिंदी में अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाया वस्तुतः हिंदी के माध्यम से ही ~~हिंदी~~ समाज सुधार को तेज गति प्रदान की जा सकती थी

* ब्रह्म समाज में होने वाली संगोष्ठियाँ, आयोजन इत्यादि हिंदी भाषा में ही हुआ करते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* ब्रह्म समाज से जुड़े हुए 'केशवचंद्र सेन, देवेंद्रनाथ टैगोर' का भी हिंदी के विकास में अहम योगदान रहा

केशवचंद्र सेन राष्ट्र की एकता हेतु राष्ट्रभाषा हिंदी का विकास अनिवार्य मानते थे। वह हिंदी को संवाद का माध्यम और विचारों को प्रकट करने का अहम जरिया मानते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणवी बोली'

हरियाणवी बोली का संबंध पश्चिमी हिंदी उपभाषा वर्ग से है। जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है।

हरियाणवी बोली का प्रयुक्ति क्षेत्र मुख्यत: हरियाणा तथा इसके आसपास के क्षेत्र से है।

ध्वनिगत विशेषता

① यहाँ 'न' की जगह 'ण' की प्रवृत्ति
उदाहरण - पानी ⟶ पाणी

② यहाँ 'ल' की जगह 'ळ' की प्रवृत्ति
बालक ⟶ बाळक

③ आकारंतता की प्रवृत्ति

④ महाप्राण ध्वनि के अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति यहाँ दिखाई देती है।
जैसे भूख ⟶ भूक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

व्याकरणगत विशेषता

(1) लिंग संरचना के स्तर हो लिंग स्वीकार किए जाए है। स्त्रीलिंग बनाने हेतु ई, इनी, इया, आइन इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग द्रष्टव्य होता है।

(2) वचन व्यवस्था में एक वचन से बहुवचन बनाने में ऐ, अन इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

(3) आकारांत विशेषण विकारी होते हैं।

शब्दकोषीय विशेषताएँ

तत्सम शब्दों का प्रयोग बेहद सीमित है। सर्वाधिक मात्रा में तद्भव शब्दों का प्रयोग द्रष्टव्य होता है। वहीं देशज शब्द भी पर्याप्त मात्रा में है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि का दर्जा दिलाने वाली विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिंदी एक वियोगात्मक भाषा है। जबकि संस्कृत एक संयोगात्मक भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक भाषा बनने की शुरुआत अपभ्रंश से ही शुरू होती है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य में भी अपभ्रंश का योगदान बहुत विशिष्ट है।

संवेदना के स्तर पर

① अपभ्रंश में वीरगाथात्मक काव्यों के रचने की परंपरा रही है जैसे- रासो काव्यधारा। हिंदी साहित्य की रीतिमाल काव्य धारा में भी इसी प्रकार की वीरगाथात्मक प्रवृत्ति मिलती है

② अपभ्रंश में चरित काव्य लेखन की प्रवृत्ति विद्यमान रही है। उदाहरण स्वरूप स्वयंभू, हेमचंद्र आदि कवियो द्वारा रचित चरित काव्य

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल के स्तर पर (रामचरित मानस) से ~~आधुनिक~~ आधुनिक काल (कामायनी) तक चरित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य लेखन दिखता है

(3) अपभ्रंश में भक्ति काव्य का उद्भव हुआ जैसे - स्वयंभू इत्यादि
हिंदी साहित्य की कृष्णभक्ति काव्यधारा एवं रामभक्ति काव्य धारा पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है

(4) अपभ्रंश में सिद्ध नाथ साहित्य में सामाजिक असमानता पर जो चोट की गयी है। वैसी ही चोट भक्तिकाल में कबीरदास द्वारा की गयी है

(5) अपभ्रंश में लोक काव्य लेखन की समृद्ध परंपरा का अनुसरण हिंदी साहित्य में भी दिखता है जैसे - संदेश रासक, ढोला मारु

शिल्प के स्तर पर

(1) संस्कृत में वार्णिक छंद परंपरा को मात्रिक छंद में बदलने की शुरुआत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश में ही हुई। ज्ञातव्य है कि हिंदी साहित्य में प्रयुक्त - दोहा, चौपाई इत्यादि सभी मात्रिक छंद है

(2) अपभ्रंश में काव्य रुपो के स्तर पर फाग, रास, चांचरी जैसे काव्यरुप प्रचलित रहे है। हिंदी साहित्य में तुलसी और कबीर के यहाँ फाग और चांचरी काव्यरुप के दर्शन होते है

(3) कडवक बद्ध शैली परंपरा की शुरुआत सिद्ध नाथ साहित्य से हुई। जिसका आगे अनुसरण जायसी, तुलसी द्वारा किया गया

(4) हिंदी साहित्य में मंगलाचरण, सज्जन प्रशंसा दुर्जन निंदा, नखशिख वर्णन, षटऋतु दर्शन इत्यादि अपभ्रंश से ही प्रभावित है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश का बहुमुखी योगदान रहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सेठ गोविंद दास जी का राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

1. सेठ गोविंद दास द्वारा शारदा, लोकहित जयहिंद जैसे पत्रों का प्रकाशन किया तथा हिंदी के विकास को बढ़ावा दिया।

2. सेठ गोविंद दास संविधान सभा में राजभाषा हिंदी को लेकर उठे विवाद को समाप्त करने में केंद्रीय भूमिका में रहे।

3. सेठ गोविंद दास द्वारा हिंदी को राजभाषा बनाने हेतु सर्वप्रथम प्रस्ताव 1927 में कॉमिन के समक्ष रखा।

4. राष्ट्रभाषा हिंदी की पक्षधरता को लेकर उनका रुझान इतना अधिक था कि उन्होंने कांग्रेस से व्हिप के उल्लंघन की अनुमति लेकर हिंदी के पक्ष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में निर्भीकता से योगदान दिया

⑤ सेठ गोविंददास हिंदी के विकास एवं अभिवर्द्धन हेतु ~~प्राणों~~ बलिदान की माँग करते है थे।

"हम राष्ट्र भाषा हिंदी के सच्चे सेवक तभी कहे जा सकते है जब हम राष्ट्रभाषा हिंदी हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दे।

⑥ देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार एवं अभिवर्द्धन में वह लगातार सक्रिय रहे

"देवनागरी लिपि सम्पुर्ण विश्व की सभी लिपिओं से अधिक वैज्ञानिक है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

छत्तीसगढ़ी
अवधी
बघेली

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

15

(ग) 'छत्तीसगढ़ी' बोली का परिचय दीजिये।

छत्तीसगढ़ी बोली 'पूर्वी हिंदी उपभाषा' वर्ग की अहम बोली है। जिसका संबंध 'अर्द्ध मागधी अपभ्रंश' से है।

छत्तीसगढ़ी बोली का प्रयुक्ति क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य एवं उसके आस पास के सीमित क्षेत्रों में ही है।

ध्वनिगत विशेषताएं

(1) अल्पप्राण ध्वनियों के महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति

उदाहरण
दौड़ → धौड़
कचहरी → कछेरी

(2) यहाँ 'स' का 'छ' तथा 'व' का 'ब' तथा 'ल' का 'र' में परिवर्तन हो जाता है

जैसे।
सीता → छीता
वचन → बचन
बालक → बारक

(3) यहाँ उकारांतता की प्रवृत्ति भी दर्शित होती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) व्याकरणगत विशेषता

① यहाँ संज्ञा के तीन रूपों का प्रचलन दिखता है।

लरिका → लरिकवा → लरिकउना

② विशेषण के स्तर पर अविकारी प्रवृत्ति दिखाई देती है

जैसे - छोट लरिका → छोट लरिकवा

③ स्त्रीलिंग बनाने हेतु ई, इनी इया प्रत्ययों का प्रयोग सामान्यतः दिखता है

बेटी - बिटिया

लड़का - लड़की

④ बहुवचन बनाने हेतु 'न' 'एन' एँ प्रत्यय का प्रयोग आम है

जैसे लरिका → लरिकन

रात — रातें

⑤ क्रिया संरचना के अंतर्गत भविष्यकाल के स्तर पर 'ब' रूप दिखाई देता है

जैसे - 'खाइब'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्दकोशीय विशेषता

शब्दों के स्तर पर तत्सम, तद्भव देशज, विदेशज सभी शब्दावलियों के दर्शन होते है। यहाँ तद्भव शब्दावली का प्रयोग अधिक हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास को सूरदास युग एवं रीतिकाल दोनो स्तरो पर देखा जा सकता है

सूर युग

भक्तिकाल की कृष्णभक्ति काव्य परंपरा का अभ्युदय शुद्धाद्वैत के प्रतिपादक वल्लभाचार्य के आगमन के साथ होता है। हालाँकि पूँ तो सूरदास से पूर्व अमीर खुसरो तथा नाथ परंपरा में ब्रजभाषा का कुछ सीमित प्रयोग दृष्टि होते है किन्तु इसका चरम विकास सूरदास आगमन के बाद ही होता है।

सूरदास ने शृंगार व वात्सल्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा का प्रयोग इतनी उत्कृष्टता से किया कि शुक्ल जी को कहना पडा

"चलती फिरती लोकभाषा में पहली साहित्यिक कृति सूर की मिलती है जिसकी पुष्टता आश्चर्य में डालती है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सूरदास के काव्य में वात्सल्य वर्णन, बेहद बिंब धर्मी एवं माधुर्य युक्त हो उठे है। उदा.

" छुटरनि चलत रेनु तन मंडित
मुख दधि लेप किए"

इसी प्रकार श्रृंगार के स्तर — संयोगात्मकता एवं वियोगात्मकता दोनों के दर्शन सूरदास के साहित्य में होते हैं

" निरखत अंक स्याम सुंदर के
बार-बार लवाति छाती,
लोचन जल कागद मासि
मिलिके ह्वै गए स्याम-स्याम की पाती"

सूरदास जी की एक अन्य विशेषता यह रही कि उन्होंने भाषा को व्यापकता प्रदान करने हेतु आपन हमार जैसे पूर्वी प्रयोग तथा महंगी जैसे (पंजाबी) शब्दों का प्रयोग किया

सूर युग में अष्टछाप के अन्य कवियों ने भी ब्रज भाषा के साहित्यिक विकास में अहम योगदान दिया उदाहरण हेतु नंददास का यह दोहा

" जो उनके गुन नाहिं, और गुन गए कहाँ तें
बीज बिना तरु जामि नाहि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाल

रीतिकाल में ब्रजभाषा का साहित्यिक विकास और रीतिबद्ध काव्यधारा (विशेषत: बिहारी) रीतिमुक्त काव्यधारा (विशेषत: घनानंद) में विशेषत: दिखाई देता है।

बिहारी की ब्रजभाषा में भाषा की समास क्षमता एवं भावों की समाहार क्षमता के दर्शन होते हैं। उदाहरण स्वरूप निम्न दोहे में बिहारी की काव्यकला का अनूठा प्रयोग दिखता है

"कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैनुन ही सो बात"

रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद की साहित्यिक भाषा अत्यंत प्रशंसनीय है। आचार्य शुक्ल जी इनकी तारीफ में कहते हैं कि

"इनकी सी विशुद्ध, संस्कारित ब्रजभाषा का प्रयोग अन्यत्र कहीं नहीं है"

घनानंद की ब्रजभाषा में ~~संवेदनागत~~ संवेदनशीलता, अनुभूतिशीलता अत्यंत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रशंसनीय है।

रीतिकाल में ब्रजभाषा के चरम विकास के कारण ही भिखारी दास कहते है।

ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो
ऐसे ऐसे कवि न की बोली है सो जानिस"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'भोजपुरी' बोली के उत्पत्ति-स्रोत, विस्तार-क्षेत्र और व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

भोजपुरी 'बिहारी हिंदी उपभाषा' वर्ग की की अहम बोली है। जिसका विकास मागधी अपभ्रंश' से हुआ है।

भोजपुरी का विस्तार क्षेत्र

बिहार के छपरा तथा अन्य पश्चिमी जिलो तथा उत्तरप्रदेश के पूर्वी जिलो में व्याप्त है। इसके साथ कुछ अन्य देशो में भी (जैसे - फिजी, मारीशश आदि में) भोजपुरी का प्रयोग दिखाई देता है। ज्ञातव्य है कि भोजपुरी हिंदी की सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

① संज्ञा के तीन रूप यहाँ मिलते हैं
उदाहरण घोरा, घोरवा, घोररवा

② सर्वनाम के स्तर पर हमार, तुहार, ओकर ओनकर का प्रयोग अत्यधिक होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) काल संरचना के स्तर पर वर्तमान काल हेतु - ब रूप । तथा भूतकाल हेतु 'ल' रूप एवं भविष्य काल हेतु 'ब' रूप दृष्टित होता है।

(4) बहुवचन बनाने हेतु 'लोगन' 'जनन' वर्ग जैसे प्रत्ययों का प्रयोग दिखाई पड़ता है।

(5)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

श्री कामता प्रसाद गुरु हिंदी के प्रमुख वैयाकरण का स्थान रखते है।

द्विवेदी युग भाषीय द्वैत का समय रहा तथा साथ ही हिंदी व्याकरण का रूप निश्चित न हो पाने के चलते भाषीय अनुशासन का अभाव दिखाई पड़ता था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भी सरस्वती पत्रिका में एक लेख लिखकर इस पर अपनी चिंता जता चुके थे। स्वयं कामता प्रसाद गुरु ने भी सरस्वती पत्रिका में 'हिंदी की हीनता' नाम से एक लेख लिखा। और हिंदी के लिए निश्चित व्याकरण न होने के चलते चिंता जताई। हालांकि इस समय तक नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी के व्याकरण लेखन हेतु कुछ-कुछ प्रयास किए गए। किन्तु अंतत: इस कार्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हेतु सर्वसम्मति से कामता प्रसाद गुरु का नाम स्वीकार किया गया।

कामता प्रसाद गुरु द्वारा लिखे गए व्याकरण के निरीक्षण हेतु आचार्य शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, तथा राहुल सांकृत्यायन सदस्यों को लेकर एक कमेटी बनाई गए।

कामता प्रसाद गुरु ने हिंदी व्याकरण लेखन में 'प्लाट्स' कृत 'हिंदी ग्रामर' तथा शैली के स्तर पर 'दामले' कृत 'मराठी व्याकरण' का प्रयोग किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो आदिकालीन साहित्य धारा के प्रमुख कवि है। जिन्होंने अपने साहित्य में ज्ञानमूलक साहित्य, सूफी साहित्य तथा सामाजिक संवेदनाओं से युक्त होकर साहित्य लिखा।

अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप उत्कृष्ट स्तर का दिखाई देता है। जिसके कारण शुक्ल जी को यह कहना पड़ता है।

"क्या इस समय तक खड़ी बोली घिस-घिसकर इतनी चलती हो गयी थी जितनी खुसरो के काव्य में दिखाई देती है"

अमीर खुसरो के साहित्य में ठेठ खड़ी बोली का उदाहरण

"एक थाल मोतियों से भरा सबके सिर ऊँचा धरा
चारों ओर वह थाल फिरे,
मोती इससे एक न गिरे"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार खुसरों के साहित्य में खड़ी बोली और ब्रजभाषा का मिश्रित स्वरूप भी दिखता है।

" खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो बूड़ा सो डूब गया जो उतरा सो पार "

अंत: खुसरों साहित्य ~~की~~ का खड़ी बोली के विकास में अहम योगदान रहा है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत साहित्य भक्ति कालीन काव्य धारा है। जिसके प्रमुख कवि - कबीरदास, मलूकदास, रैदास इत्यादि है।

यूँ तो संत साहित्य में भाषा सधुक्कड़ी का प्रयोग ~~[illegible]~~ होता है। जिसे पंचमेल खिचड़ी भी कहा जाता है। अर्थात् कई जगह की बोलियों का मिश्रण। यही कारण है कि संत साहित्य में खड़ी बोली का भी आरंभिक स्वरूप दर्शित होता है।

"मन मस्त हुआ तब क्यों बोले
हमारा यार है हमन में बाहर नैना क्यों खोलें"

~~हम~~ यहाँ अधिकांश शब्द खड़ी बोली के ही साथ ही कुछ शब्द (जैसे (हमन)) पूर्वीपन को संकेतित करते है

संत कालीन साहित्य के अन्य कवि जो रीतिकाल में साहित्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रचना कर रहे थे। वहाँ देखें तो ज्ञात होता है कि खड़ी बोली अधिक स्पष्ट रूप से वहां परिलक्षित होती है।

"अजगर करै न चाकरी
पंछी करै न काम
दास मलूका कह गए
सबके दाता राम"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि खड़ी बोली के विकास में संत साहित्य का भी अहम योगदान है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी बोली खस अपभ्रंश से निकली ~~...~~ पहाड़ी हिंदी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोली है।

कुमाऊँनी बोली का प्रयुक्ति क्षेत्र उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र से है। कुमाऊँनी पर राजस्थानी बोली का पर्याप्त प्रभाव दर्शित होता है। इसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है।

(1) ओकारान्तता की प्रवृत्ति
जैसे - घोडा - घोडो

(2) एक वचन से बहुवचन बनाने के क्रम में 'अन' प्रत्यय का प्रयोग समान्यत: किया जाता है
जैसे घोडा → घोडन

(3) महाप्राण ध्वनियों के अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा और बोली में अंतर भाषा वैज्ञानिक न होकर समाज भाषा वैज्ञानिक है।

① भाषाओं में ~~को भाषाओं के मध्य~~ बोधगम्यता सीमित होती है। ~~अर्थात्~~ यदि दो बोलियों में बोधगम्यता का स्तर बना रहता है।

② भाषा अधिक व्यापक होती है जिसका प्रयोग कार्यालयी भाषा में भी होता है वहीं बोली समाज में आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होती है।

③ भाषा का व्याकरण अत्यधिक सुदृढ़ होता है। वहीं बोली का व्याकरण मानकीकृत नहीं होता है।

④ भाषा ~~की~~ एक विशेष लिपि होती है। वहीं बोली की सामान्यतः लिपि नहीं होती है।

भाषा और बोली में अंतर करना चुनौतीपूर्ण है। वस्तुतः भाषा और बोली की स्थिति गतिमान रहती है। उदाहरण हेतु खड़ी बोली जोकि एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

समय बोली थी वह आज भाषा है वहीं ब्रजभाषा जोकि एक समय ~~बोली~~ भाषा थी आज मात्र एक बोली है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तम दास टंडन का अहम योगदान है। 'हिंदी के प्रहरी' कहे जाने वाले टंडन हिंदी को राजभाषा के पद पर सुशोभित करवाने में महत्वपूर्ण योगदान रखते है।

पुरुषोत्तम दास टंडन राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास हेतु हिंदी 'साहित्य सम्मेलन' से जुड़े रहे साथ ही इनकी ही प्रेरणा से महात्मा गांधी भी हिंदी साहित्य सम्मेलन से जुड़े।

इन्होने मदन मोहन मालवीय, एवं लाला लाजपत राय के साथ मिलकर राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में अहम योगदान दिया।

पुरुषोत्तम दास टंडन द्वारा देवनागरी लिपि के विकास हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए। टंडन जी द्वारा अंतराष्ट्रीय अंकों के बजाय देवनागरी अंको का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुरजोर समर्थन किया।
पुरुषोत्तम दास टंडन द्वारा उर्दू और हिंदी के विवाद में ~~उर्दू~~ हिंदी को प्रमुखता से रखा

अतः कहा जा सकता है कि पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी के वास्तविक प्रहरी है। वे कहते है कि
"मैं राष्ट्रभाषा के प्रचार हिंदी के प्रचार को राष्ट्रीयता का प्रमुख अंग मानता हूँ। मैं राष्ट्रभाषा को इस रूप मे देखता हूँ जिसमे विभिन्न राज्यों के व्यक्ति आपस के संचार कर सकू।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है किन्तु इसके बावजूद कुछ भाषावैज्ञानिकों द्वारा इसके कुछ कमियों को निरूपित किया है।

① देवनागरी लिपि में अक्षरों, आधे अक्षर, मात्राएं, द्वित्व अक्षर, आदि को मिलाकर अत्यधिक वर्णों को याद रखने की आवश्यकता पड़ती है जोकि बेहद व्ययसाध्य काम है।

② देवनागरी लिपि की मात्राव्यवस्था को कुछ भाषा वैज्ञानिक अवैज्ञानिक बताते हैं।

③ कई वर्ण अनावश्यक हैं जैसे ऋ ॠ इत्यादि स्वरों को भी 'अ' के साथ एकीकृत करके लिखा जा सकता है।

④ टंकण के क्षेत्र में भी हिंदी बेहद कठिन भाषा है। आधे अक्षर, मात्राएं, युक्तों इत्यादि को मिलाकर कुल 400 टाइप की आवश्यकता पड़ती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(4) कुछ वर्णों में भ्रम की स्थिति है
जैसे ① रव → ख
② भ → म

(5) कुछ वर्णों हेतु एकाधिक संकेत उपस्थिति है
जैसे - झ → झ

(6) देवनागरी में मात्राव्यवस्था के अंदर कुछ मात्राएँ आगे से लगती है। कुछ पीछे से कुछ बाएँ से तो कुछ दाएँ से। जिसे लेकर कुछ भाषा वैज्ञानिक आलोचना करते है
जैसे - जीवन, शिशु, मृत्यु

(7) आधे अक्षरों को लेकर भी भ्रम की स्थिति कुछ आधे अक्षर वर्ण के नीचे लगते है तो कुछ उपर
जैसे → दर्प
→ श्रद्धा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑧ छोटी ई की मात्रा को लेकर अवैज्ञानिकता
उच्चारण बाद में होता है किन्तु लगाती
पहले है।
जैसे किताब

⑨ अनुस्वार प्रयोग का फैशन सा
चल पड़ा है।
जैसे संबंध — सम्बन्ध

अतः देवनागरी लिपि में कुछ
सीमाएँ जरूर है किन्तु अधिकांश
को मानकीकरण की प्रक्रिया के
क्रम में सुधार लिया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली के विकास में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का अहम योगदान है।

जहाँ तक व्यावसायिक शिक्षा की बात है तो व्यावसायिक शिक्षा का संबंध इंजीनियरिंग शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, प्रबंधन शिक्षा, पत्राचार शिक्षा इत्यादि से लिया जा सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का विकास संतोषजनक दिखाई नहीं देता है। वस्तुतः सामान्यतः व्यावसायिक शिक्षण के कार्सेज में न तो पाठ्य हिंदी में पुस्तकें उपलब्ध है या तो पढ़ाने वाले।

वस्तुतः पर्याप्त शोध और विकास न होने के चलते हिंदी में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यावसायिक शिक्षा संबंधित परिभाषित शब्दों का बेहतर अनुवाद न हो सका। जो अनुवाद हुआ भी वो बेहद क्लिष्ट और अबोधगम्य था।

ऐसा होने के पीछे कुछ मूल कारण भी है वस्तुतः व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित नए-नए अनुसंधान अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में ही होते है। और वर्तमान में हिंदी उतनी प्रगति नहीं कर पायी है कि मूल अनुसंधान ही हिंदी भाषा में हो सके फलतः अनुवाद के क्रम में ना चाहते कुछ भी क्लिष्टता आ ही जाती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालांकि इसके बावजूद भी कई व्यावसायिक शिक्षा जैसे पत्राचार शिक्षा इत्यादि में हिंदी की स्थिति काफी समरात्मक रही है।

हिंदी की स्थिति को और मजबूत करने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे वैज्ञानिक अपना मूल लेखन हिंदी में करें। पढाई का माध्यम हिंदी हो तथा अनुवाद करते समय उदारता प्रदर्शित करते हुए अंग्रेजी शब्दों का ही देवनागरी में रूपांतरण किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 15

~~हिंदी शब्द~~

निर्माण की दृष्टि से हिंदी शब्दों को रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ में विभाजित किया जा सकता है।

① रूढ़ शब्द : ये वे शब्द हैं जिनकी व्युत्पत्ति ज्ञात न हो

जैसे - गाय

② यौगिक शब्द : दो रूढ़ शब्दों से मिलकर ~~यौगिक~~ शब्द बनते हैं।

जैसे - पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

③ योगरूढ़ शब्द :- ये संरचना की दृष्टि से यौगिक शब्द होते हैं किन्तु अर्थ के स्तर पर किसी अन्य अर्थ की व्यंजना करते हैं

जैसे - दशानन, पंकज, नीलकण्ठ

कृपया इस
कुछ न लि
(Please do
anything

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्रोत की दृष्टि से हिंदी शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज में विभाजित किया जा सकता है

① तत्सम : ये वे शब्द हैं जिनको संस्कृत से लिया गया है।

जैसे - उच्च, मुख

② तद्भव शब्द : ये शब्द संस्कृत शब्दों के सरलीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुए हैं

जैसे - उच्च → ऊँचा
मुख → मुँह

③ देशज शब्द : ये शब्द हर भाषा के क्षेत्रीय स्वरूप के कारण होते हैं। एवं क्षेत्रीयता को दर्शाते हैं। इनमें प्राय ध्वन्यात्मकता, दिखाई पड़ती है।
जैसे : टन टनाना, घिनघिनाना
फणीश्वरनाथ रेणु कृत मैला आँचल में देशज शब्द अत्यधिक दिखाई पड़ते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विदेशज शब्द

ये वे शब्द है जोकि विदेशी सभ्यता से आदान प्रदान से हमारी भाषा में आ गए है।

जैसे - जापानी → रिक्शा

अंग्रेजी → मोटर साइकिल

सामान्यतः किसी भी भाषा बोली में तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक किया जाता है। एवं विदेशज, देशज, तत्सम शब्द सीमित मात्रा में होते है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पुरानी हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation